02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - तुम विकारों का दान दे दो तो राहू का ग्रहण उतर जायेगा, दे दान तो छूटे ग्रहण"

प्रश्नः- वृक्षपति बाप अपने भारतवासी बच्चों पर बृहस्पति की दशा बिठाने के लिए कौन सी स्मृति दिलाते हैं?

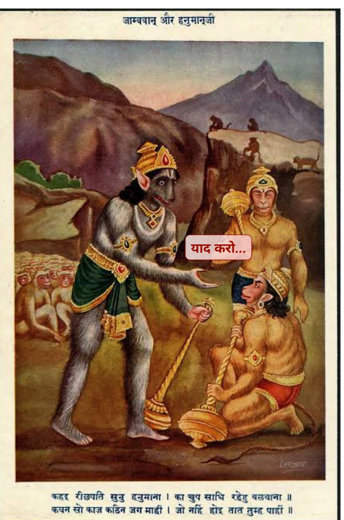

Click

उत्तर:- हे भारतवासी बच्चों, तुम्हारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म अति श्रेष्ठ था। तुम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण थे। तुम मुझ सागर के बच्चे काम चिता पर बैठ काले हो गये हो, ग्रहण लग गया है। अब मैं तुम्हें फिर से गोरा बनाने आया हूँ, यह स्मृति आने से बृहस्पति की दशा बैठ जाती है।

गीत:-ओम् नमो शिवाए... Click

ये पक्का समझ लो..

ॐ नमः शिवाय
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो
जिसका कोई आधार नहीं
उसके तुम एक सहारे हो
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो

तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा ढारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही ऊजियारे हो

इक नाम तेरा ही सच्चा है,
बाकी सब जूठी माया है।
जो अपना सब कुछ छोड़ चला, ← very strict condition
उसने ही तुमको पाया है।
जिस मन में तुम्हारी भक्ति जगी,
उसके तुम्ही तो सहारे हो।
पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।
जिसका कोई आधार नहीं,
उसके तुम एक सहारे हो।

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।

ग np.

ओम् शान्ति। यह किसकी महिमा सुनी? बेहद के बाप की। ऊंच ते ऊंच बाप परमपिता परमात्मा ही है। लौकिक बाप के लिए तो सब नहीं कहेंगे। बच्चे जानते हैं सब आत्माओं का पारलौकिक बाप - वह है ऊंच ते ऊंच। उनका नाम ही है शिव। बिगर नाम रूप के तो कोई चीज़ होती नहीं। इस समय सबको राहू का ग्रहण लगा हुआ है, इसलिए इनको आइरन एजेड वर्ल्ड कहा जाता है। दशायें भी होती हैं, बृहस्पति की दशा, शुक्र की दशा... अब तुम्हारे ऊपर है बृहस्पति की दशा। जिसकी महिमा सुनी, ऊंच ते ऊंच भगवान शिवबाबा। उनका असुल नाम है शिव। बाकी किसम-किसम के अनेक नाम रख दिये हैं। असुल नाम है शिवबाबा। बाप समझाते हैं मैं बीजरूप, चैतन्य हूँ। सत चित कहते हैं फिर कहते हैं वह सुख का सागर है, आनंद, शान्ति का सागर है। महिमा सारी उस एक की ही है। भारतवासी महिमा गाते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। एकदम पत्थरबुद्धि हो गये हैं। पत्थरबुद्धि किसने बनाया? रावण ने। सतयुग में भारतवासी पारसबुद्धि थे, आज से 5 हजार वर्ष पहले यह

ये पक्का समझ लो..

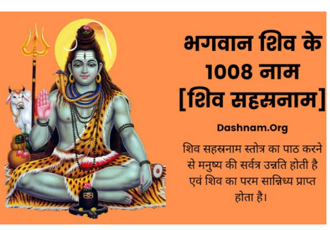

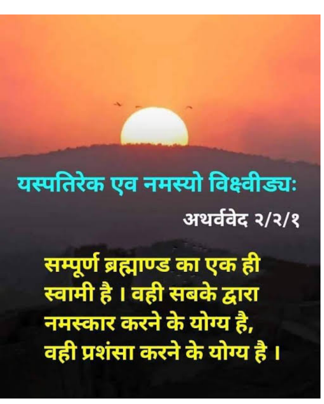

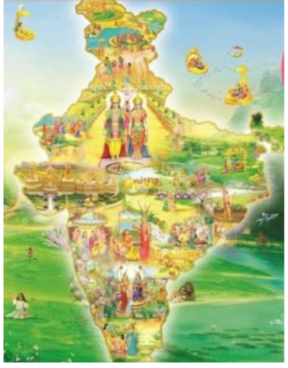

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

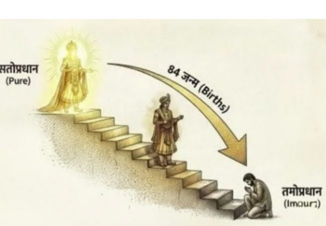

भारत पारसपुरी था, जिसमें देवी-देवता रहते थे। भारत ही अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। भारत में ही पारसबुद्धि देवता थे, इस समय पत्थरबुद्धि पतित रहते हैं। पतित कैसे बनते हैं, यह भी बाप ने समझाया है। द्वापर से जब काम चिता पर बैठे हैं तो काले बन जाते हैं। काम अग्नि में सब भस्म हो गये हैं। उसमें भी खास भारत की बात है। भारत में पारसबुद्धि देवताओं का राज्य था, उनको विष्णुपुरी, रामराज्य भी कहा जाता था। यह बाप आकर बताते हैं। How Sweet...! मीठे-मीठे लाडले बच्चों जब तुम सतयुग में थे, सर्वगुण सम्पन्न थे। यह तुम्हारी महिमा है। वहाँ विकार होते नहीं। द्वापर से रावण, 5 विकारों का राज्य शुरू हुआ है। तो रामराज्य बदलकर रावण राज्य होता है। अभी ग्रहण लगा हुआ है। बिल्कुल ही भारत काला हो गया है। बृहस्पति की दशा सबसे अच्छी होती है। भारत पर बृहस्पति की दशा सतयुग में थी। फिर त्रेता में शुक्र की दशा तो दो कला कम हो गई। उसको कहा ही जाता है सिल्वर एज। फिर द्वापर, कलियुग आया। सीढ़ी उतरते आये, शनीचर की दशा हुई। इस

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

समय सब पर राहू की दशा है। सूर्य को ग्रहण लगता है तो कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण।

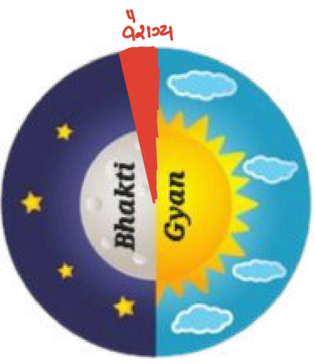

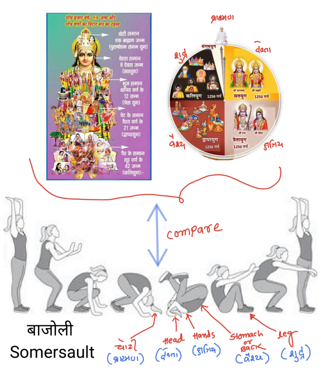

अब रूहानी बाप बच्चों को समझाते हैं - यह है रूहानी ज्ञान। यह कोई शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। शास्त्रों के ज्ञान को भक्ति मार्ग कहा जाता है। सतयुग-त्रेता में भक्ति होती नहीं। ज्ञान और भक्ति, फिर है वैराग्य अर्थात् इस पुरानी दुनिया को छोड़ना होता है। यह है शूद्र वर्ण। विराट रूप दिखाते हैं ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य... यह भारत की ही कहानी है। विराट रूप बनाते भी हैं, परन्तु पत्थरबुद्धि समझते नहीं। पत्थरबुद्धि क्यों हैं? क्योंकि पतित हैं। भारतवासी ही पारसबुद्धि थे, सम्पूर्ण निर्विकारी थे। आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था और कोई खण्ड नहीं था, यह बाप समझाते हैं। यह राजयोग कौन सिखाते हैं? शिवाचार्य। यह है ज्ञान का सागर। कोई मनुष्य को ज्ञान का सागर, सर्व का पतित-पावन नहीं कह

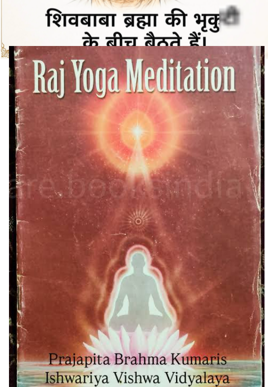

सकते हैं। सर्व का लिबरेटर एक ही बाप है। बाप खुद ही आते हैं - दु:ख में रावण से लिबरेट करने, फिर गाइड बन ले जाते हैं। उनको रूहानी पण्डा कहा जाता है। बाप कहते हैं - मैं तुम सर्व आत्माओं का पण्डा हूँ, सबको वापिस ले जाऊंगा। मेरे जैसा गाइड कोई होता नहीं। कहते भी हैं गॉड फादर इज़ लिबरेटर, गाइड, ब्लिसफुल... सबके ऊपर रहम करते हैं क्योंकि सब सागर के बच्चे काम चिता पर बैठ जल मरे हैं। उसमें भी खास भारत की बात है। बाप कहते हैं - तुम 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी थे। अब काम चिता पर बैठ तुम क्या बन गये हो! अब फिर बाप आये हैं। वृक्षपति बाप आकर मनुष्य मात्र पर बृहस्पति की दशा बिठाते हैं। खास भारत, आम विश्व पर इस समय राहू का ग्रहण लगा हुआ है। बाप कहते हैं - मैं ही आकर भारत की खास, दुनिया की आम गति -सद्गति करता हूँ। तुम यहाँ आये ही हो पारसबुद्धि बनने। मोस्ट बील्वेड बाप हुआ - सब आशिकों का माशूक एक ही है। सब नेशन में लिंग जरूर बनाते हैं क्योंकि सबका बाप है ना। शिव के मन्दिर भारत

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

में बहुत हैं, जिसको शिवालय कहते हैं, रहने का स्थान। सतयुग में हैं देवी-देवता धर्म के मनुष्य, परन्तु वह धर्म कब था, उन्हों का राज्य कब था... यह पता नहीं है। सतयुग की आयु लम्बी लिख दी है। बाप बैठ समझाते हैं तुम्हारे ऊपर अब बृहस्पति की दशा बैठ रही है - 21 जन्मों के लिए। वृक्षपति है ज्ञान का सागर पतित-पावन, जिसको सब पुकारते हैं। तुम मात-पिता हम बालक तेरे, सब उनकी महिमा करते हैं। बरोबर सतयुग त्रेता में सुख घनेरे थे। जबकि बाप हेविनली गॉड फादर है, स्वर्ग का रचयिता है तो जरूर हम भी स्वर्ग में होने चाहिए। बाप समझाते हैं तुम सब स्वर्गवासी थे, अब नर्कवासी बने हो। भारत का ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म है। जैसे क्रिश्चियन धर्म के हैं, वह क्रिश्चियन धर्म के ही चले आते हैं। बाप कहते हैं - तुम देवी-देवता धर्म वाले अपने धर्म को क्यों भूल गये हो! जबकि तुम देवी-देवता धर्म के थे।

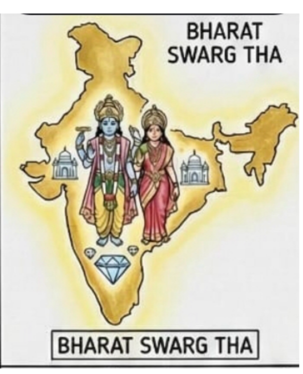

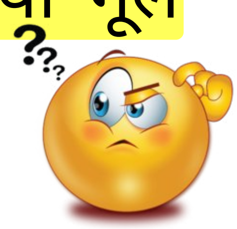

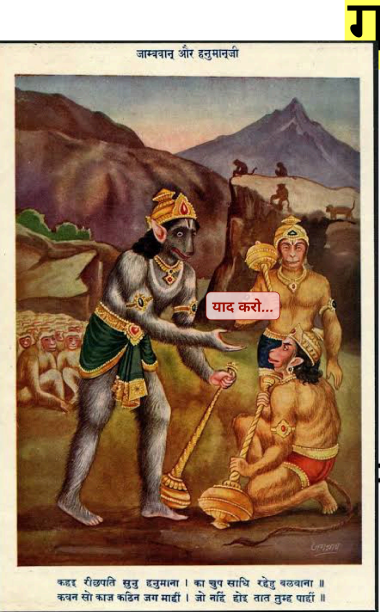

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप स्मृति दिलाते हैं - तुम्हारा सबसे श्रेष्ठ धर्म, कर्म था। अभी तुम नीच, पापी, कंगाल बन गये हो, तुम हो ही देवताओं के पुजारी, फिर अपने को हिन्दू क्यों कहलाते हो? भारत का यह क्या हाल हो गया है। जो देवता धर्म के हैं वह विकारी बनने के कारण अपने को देवता कहलाते नहीं। बाप कहते हैं - अभी इस पतित दुनिया का अन्त है, महाभारत लड़ाई भी खड़ी है। भगवानुवाच - हम तुमको सतयुग के लिए राजयोग सिखाता हूँ। भगवान तो एक ही है, हम उनके बच्चे सालिग्राम हैं। बाप कहते हैं - तुम जो पूज्य थे वही पुजारी भगत बन गये हो। अब फिर ज्ञान लेते हो पूज्य देवता बनने के लिए। फिर द्वापर से पूज्य सो पुजारी बन जायेंगे। तुम पूरे 84 जन्म लेते हो। जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं वही आकर ब्रह्माकुमार कुमारी बनेंगे। ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन धर्म की स्थापना - यह भी गाया हुआ है। प्रजापिता है तो बहुत बच्चे भी होंगे। वह तो जरूर यहाँ ही चाहिए। कितनी ढेर प्रजा है। इन ब्राह्मणों को ही फिर देवता बनना है। बाप आकर शूद्र से बदल ब्राह्मण धर्म की स्थापना

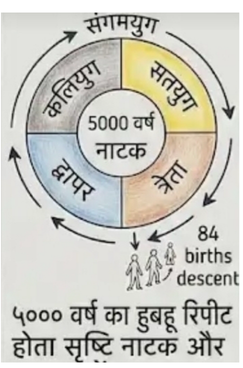

Simple Logic

...s: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

करते हैं। इस संगमयुग पर ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। यह है कल्याणकारी संगमयुग। इस लड़ाई को ही कल्याणकारी कहा जाता है। इस विनाश के बाद ही फिर स्वर्ग के गेट खुलते हैं। तुम यहाँ आये हो स्वर्गवासी बनने वा विष्णुपुरी में चलने। तुम बच्चों पर अब अविनाशी बृहस्पति की दशा है। 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है। फिर दो कला कम होती हैं तो शुक्र की दशा कहा जाता है। सतयुग में बृहस्पति की दशा है फिर त्रेता में शुक्र की दशा। फिर नीचे गिरते आये हो, मंगल की, शनीचर की, राहू की दशा भी होती है। जन्म-जन्मान्तर उल्टी दशायें फिरती आई हैं। अब बाप द्वारा बृहस्पति की दशा बैठी है। यह है बेहद का बाप ज्ञान का सागर, पतित-पावन। वही तुम्हारा बाप भी है, शिक्षक भी है, सतगुरू भी है। बाकी सब हैं झूठे, किसकी सद्गति कर नहीं सकते। इसको कहा जाता है विशश वर्ल्ड। वह है वाइसलेस वर्ल्ड। अब विशश वर्ल्ड में सभी बहुत दु:खी हैं। लड़ाई मारामारी क्या-क्या हो रहा है, इसको कहा जाता है - खूने

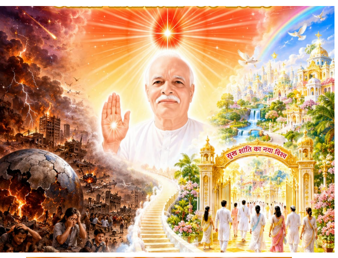

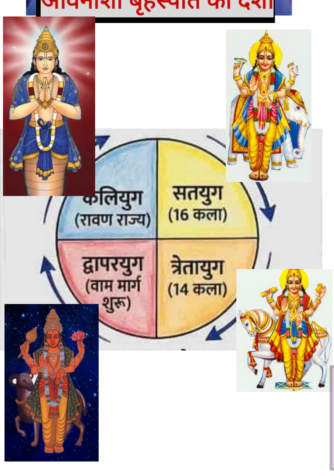

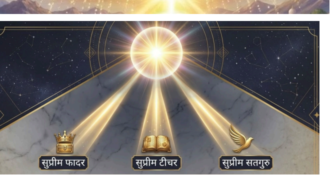

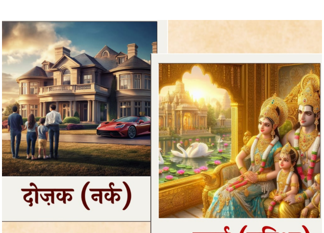

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

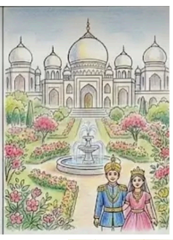
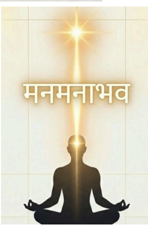

नाहेक... बिगर कोई कसूर के क्या-क्या करते रहते हैं। एक ही बाम ऐसा गिरायेंगे जो झट सारे खलास हो जायें। यह वही संगमयुग का समय है। तुम देवताओं के लिए फिर नई दुनिया चाहिए। तो अब बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चे मनमनाभव। यह कौनसे बाप ने कहा? शिवबाबा ने। वह तो है निराकार। यूँ निराकार तो तुम भी हो। परन्तु तुम पुनर्जन्म में आते हो, मैं नहीं आता हूँ। इस समय सब पतित हैं, एक भी पावन नहीं। पतित बनना ही है। सतो-रजो-तमो में उतरना पड़े। इस समय सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। दुनिया बिल्कुल पुरानी हो गई है। अब फिर से उनको नया बनाना पड़े। पतित दुनिया में देखो मनुष्य कितने हैं। पावन दुनिया में बहुत थोड़े राज्य करते हैं। एक ही धर्म था और कोई धर्म नहीं था। भारत को ही हेविन कहा जाता है। गाया जाता है - घट ही में सूर्य, घट ही में चन्द्रमा...। सतयुग में 9 लाख होंगे, पीछे फिर वृद्धि होती है। पहले बहुत छोटा फूलों का झाड़ होता है, कांटों का कितना बड़ा फारेस्ट है। देहली में मुगल गार्डन देखो

घट ही में सूर्य, घट ही में चंद्रमा, घट ही में ज्योति प्रकाशे रे।
घट ही में गंगा, घट ही में यमुना, घट ही में तीर्थ वासे रे॥

यह पंक्ति दर्शाती है कि बाहरी तीर्थों, नदियों (जैसे गंगा, यमुना) और आकाशीय पिंडों को बाहर खोजने के बजाय, ईश्वर और उनका सारा संसार हमारे अपने हृदय और शरीर (घट) के भीतर ही समाया हुआ है।

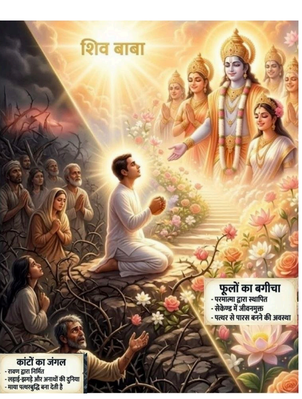

Points: ज्ञान योग धारण M.imp.

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

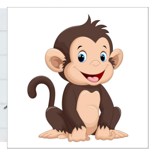

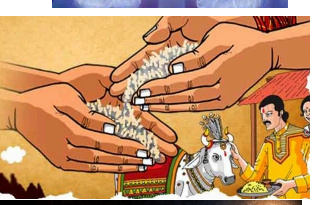

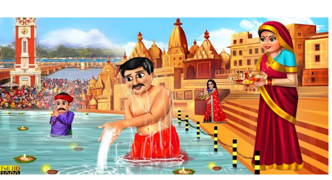

कितना अच्छा है। उससे बड़ा कोई गार्डन नहीं। फारेस्ट देखो कितना बड़ा होता है। सतयुगी गार्डन भी बहुत छोटा है। फिर वृद्धि को पाते-पाते बड़ा होता जाता है। अभी तो कांटों का जंगल हो गया है। रावण के आने से कांटे बन जाते हैं। यह है कांटों का जंगल। आपस में लड़ते हैं तो एक दो को मारते हैं। कितना क्रोध है, बन्दर से भी बदतर कहा जाता है। तो बाप कहते हैं - मेरे लाडले बच्चे

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

तुम्हारे ऊपर अभी वृक्षपति की दशा है। अब दे दान तो छूटे ग्रहण। सम्पूर्ण निर्विकारी अब यहाँ बनना है। फिर यह शरीर छोड़ जाकर शिवालय में आ जायेंगे। शिवालय में बहुत सुख होता है। देवी-देवताओं का राज्य है। सतयुग को कहा जाता है शिवालय, कलियुग को कहा जाता है वेश्यालय। यह वेश्यालय रावण ने स्थापन किया है। अब बाप कहते हैं - पतित से पावन बनना है, कैसे बनेंगे? क्या त्रिवेणी में, गंगा में स्नान करने से पावन बन जायेंगे? यह तो जन्म-जन्मान्तर करते आये हो। करोड़ों मनुष्य जाकर स्नान करते हैं। बहुत नदियां, नाले तलाब आदि हैं, जहाँ पानी देखते हैं जाकर

स्नान करते हैं क्योंकि अपने को पतित समझते हैं। अब पारसनाथ तुम्हारी पारस बुद्धि बना रहे हैं। तो ऐसे पारसनाथ बाप को कितना प्यार से याद करना चाहिए। अच्छा!

जी मेरे मीठे बाबा.. With ultimate love

Refer last 5 pages to submerge in the love of Supreme.

A very Very Very Sweet Song to lost ourself in the love of Shivbaba

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

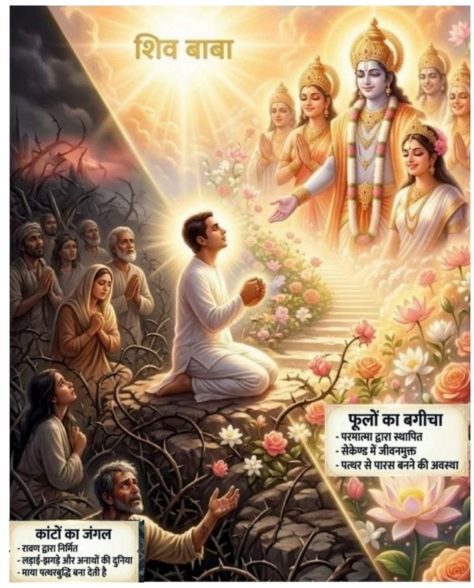

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) इस कांटों की दुनिया से फूलों के बगीचे में जाने के लिए जो भी कांटे (विकार) हैं, उन्हें निकाल देना है। पारस बनाने वाले बाप को बड़े प्यार से याद करना है।

Mind very well...

2) इस कल्याणकारी संगमयुग पर शूद्र से ब्राह्मण सो देवता बनने का पुरुषार्थ करना है। राहू के ग्रहण को उतारने के लिए विकारों का दान देना है।

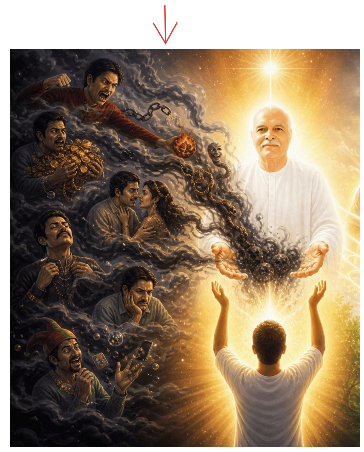

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

02-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- संगमयुग पर हर कर्म कला के रूप में करने वाले 16 कला सम्पन्न भव

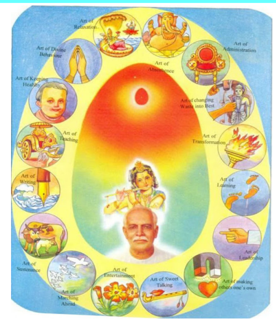

संगमयुग विशेष कर्म रूपी कला दिखाने का युग है। जिनका हर कर्म कला के रूप में होता है उनके हर कर्म का वा गुणों का गायन होता है।

16 कला सम्पन्न अर्थात् हर चलन सम्पूर्ण कला के रूप में दिखाई दे-यही सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है।

जैसे साकार के बोलने, चलने ...सभी में विशेषता देखी, तो यह कला हुई।

उठने बैठने की कला, देखने की कला, चलने की कला थी। सभी में न्यारापन और विशेषता थी।

तो ऐसे फालो फादर कर 16 कला सम्पन्न बनो।

Definition of

स्लोगन:- पावरफुल वह है जो फौरन परखकर फैंसला कर दे।

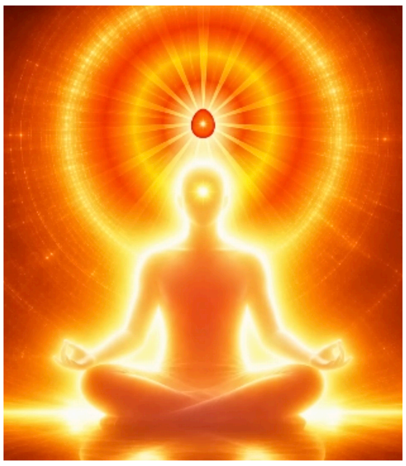

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

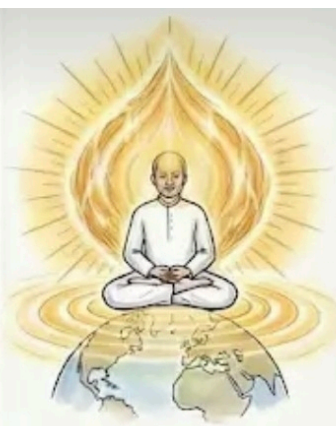

आप बच्चों का योग जब ज्वाला स्वरूप शक्तिशाली होगा तब पवित्रता की अग्नि सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकेगी।

पवित्रता की यह शक्ति महान शक्ति है।

अन्त में जब आप सम्पूर्ण पवित्र हो जायेंगे तब आपके श्रेष्ठ संकल्प के लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा 12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

Point to be Noted

या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पक्का समझ लो

Short cut

m.m.m.....Imp

Point to be Noted for life time

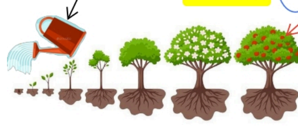

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

30/11/05

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

\- कबीर

Example

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है
इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।

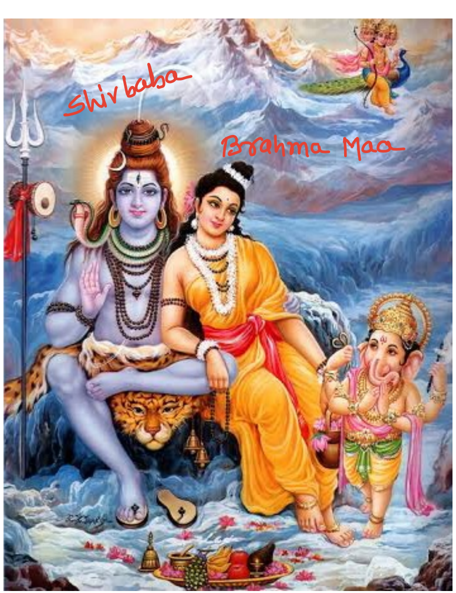

Example

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गई किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,
वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है। m.m.m. Imp

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',
शिक्षक के सम्बन्ध में-'इमानदार' और
गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और
साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?
AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....
क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

हमारे प्राणो से भी प्यारे शिवबाबा - की जिनके बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं हैं।
क्योंकि हम जब उनसे बिछुड़े तब से जैसे की शरीर से रूह निकल जाने के बाद जो शरीर की हालत होती हैं, वैसी ही मुझ आत्मा की हालत थी।
किन्तु अब वो मिल गए हैं तो हम फिर से अपने को जिन्दा महसूस करते हैं।

और भी....
माया की अक्षोहिणी सेना के सामने हमारी अकेले की हैसियत एक चींटी जितनी भी नहीं हैं और अगर प्यारे बाबा साथ/Combined हैं तो उस माया की हैसियत हमारे सामने चींटी से भी पदम् गुना कम हो जाती हैं।

तो आज ये गीत समर्पित है उस प्राणों से प्यारे सच्चे साथी शिवबाबा को...
★■◆●★■◆●★■◆●

link of this song
↓
Click

तेरी साँसों की सांस में
जो हूँ तो मैं हूँ

(ओ मेरे प्राणप्यारे साथी...!
जैसे कोई भी मनुष्य को जिंदा रहने के लिए साँस लेना अनिवार्य है, अगर साँस नहीं तो जीवन नहीं ..

वैसे ही आपकी साँस अर्थात सारे विश्व को संपन्न बनाने के आपके जो कल्याणकारी संकल्प चलते हैं तो उन संकल्पों को पूरा करने के लिए आप जिस निमित को याद करते हो तो वो मैं ही तो हूँ ।)

तेरे ख्वाबों की आंच में
जो हूँ तो मैं हूँ

(इस पतित श्रुष्टि को सम्पूर्ण पावन बनाने का जो आपका ख्वाब हैं - तो उस ख्वाब को पूरा करने अर्थ आपका सर्व श्रेष्ठ instrument/ Right hand भी तो मैं ही हूँ।

In short, आप के संकल्प वा स्वप्न में भी मैं ही तो हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना

(जैसे आप मेरे बिना नहीं रह सकते
वैसे ही आपके होने से ही तो मेरा भी होना/अस्तित्व हैं और मैं जब परमधाम से यहां पार्ट बजाने आती हूं अर्थात आप से दूर होती हूं या आपको खो देती हूं तो जैसे आपको नहीं परंतु स्वयं को ही खो देती हूं
क्युकी जैसे जिस्म और जान/आत्मा एक दूजे के बिना रह नहीं सकते वैसे ही मैं जिस्म हूं और आप मेरी जान/आत्मा।)

तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

(तो... अगर आप हो तो ही मेरा अस्तित्व हैं और
अगर यूँ ही/इस प्रकार ही हम दोनों combined हैं तो ही मैं अपने को जिन्दा पाता हूँ। अर्थात तुम नहीं तो मैं भी नहीं।)

@@@@@@@@

बिन तेरे मेरा क्या है
जिसको सुनू जिसको कहूँ

(ओ मेरे प्राणों के प्राण,
मुझे आप जरा ये तो बताईये की
आप के बिना मेरा इस जहान में हैं ही क्या वा है ही कौन..?
जिसको मैं कुछ कहूँ या फिर जिस से मैं कुछ सुनु...)

बिन तेरे मुझ में क्या है
जिसको जियूं जिस में रहूँ

(या फिर ये बताईये की
आप के बिना मुज मैं रिंचक मात्र भी ऐसा क्या हैं की जिसको मैं जीऊ या फिर जिसमे मैं रहूँ...?)

तुझ में ही दुनिया मेरी है
तेरे एक पल में सदियाँ मेरी

(मेरे प्राणनाथ, मेरे साजन ...
आप में ही तो मेरी सारी दुनिया हैं अर्थात अभी ही साकार मनुष्य श्रुष्टि मेरे लिए भस्म हुई पड़ी हैं।
और आप के साथ मैं अभी इस संगम पर जो एक पल भी बिताता हूँ तो वो मुझे आपके साथ सदियाँ बिताने का अनुपम सुख प्रदान करता हैं और उस ही सुख में मैं सदैव रहना चाहता हूँ।)

बिन तेरे मैं सहरा(सहरा के हिंदी अर्थ · मरुस्थल, रेगिस्तान, मरुभूमि, वो जगह जहाँ पानी घास और पेड़ आदि कुछ भी न हो) सा हूँ

(तो आप जब मेरे साथ होते हो तो मैं आत्मा मधुबन सी खिल जाती हूँ और
आप से बिछड़कर व आप के बिना मैं एक रेगिस्तान सी विरान बन जाती हूँ।)

बिन तेरे मैं क़तरा भी नहीं

(अगर आप साथ हो तो मेरा अस्तित्व एक अनंत महासागर सा शक्तिशाली हो जाता और
अगर आप मेरे साथ नहीं तो मेरा अस्तित्व एक पानी के बूँद जितना भी नहीं।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

@@@@@@@@@

तू मेरे चेहरे पे है
राहत सा जो ठहरा हुआ

(मेरे सिकीलधे बाबा,
आपको पाकर दिल में जो एक ही अनहद नाद निकल रहा है कि
"जो पाना था सो पा लिया"
उस कारण, मैं जिस स्थूल शरीर को ले कर पार्ट बजा रहा हूँ उस शरीर के चेहरे पर बेफिक्र बादशाह सी राहत समान ठहरे हुए हों आप।)

मैं भी तेरे हाथों में
क़िस्मत सा हूँ, बिखरा हुआ

(जैसे किस्मत की लकीरें हाथ से मिटाई नहीं जा सकती...
वैसे ही मैं भी तुम्हारे हाथों में किस्मत की लकीरों सा बिखरा हुआ हूँ
अर्थात माया,प्रकृति और सर्व आत्माएं इकठे होकर भी मुजे आपसे और आपको मुज से संकल्प मात्र भी जुदा नहीं कर सके।)

तू मेरी रूह सा है
तुझको छू के मैं ज़िंदा लगूं

(जैसे शरीर में अगर आत्मा न हो तो उस शरीर की कोई भी value नहीं होती।
वैसे ही मैं शरीर हूँ और आप मेरी आत्मा...
तो मैं शरीर आप आत्मा से combined रह कर ही अपने को जिन्दा महसूस करता हूँ।)

जब भी मैं मुझको देखूं
मुझ में भी मैं तुझ सा लगूं

(और इसीलिए तो...
जब भी मैं अपने को देखती हूँ तो 'विष्णु एवं शंकर-पार्वती के चित्र मुआफ़िक' हम दोनों एक दूजे में समाये हुए होने के कारण, जैसे आप हो वैसे ही मैं मुजको सर्व शक्तिओ/गुणों में आपके समान सारे ब्रह्मांड का मालिक अभी से ही महसूस करता हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ

other Movie Songs to submerge
in the love of Supreme
↓
Click